IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल का विकास: हिंदी भाषा में आधारभूत भाषाई कौशल हेतु

मीनाक्षी शर्मा (आचार्य)

शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, एपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत।

अशोक कुमार सिडाना

अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, एपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

प्रस्तुत लेख में हिंदी भाषा-शिक्षण के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आधारभूत भाषाई कौशल- पठन, लेखन, श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति, के विकास हेतु एक बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप प्रतिमान के विकास की प्रक्रिया का विवेचन किया गया है। यह प्रतिमान बहु-संवेदी अधिगम सिद्धांत, वायगोत्स्की के समाज-सांस्कृतिक सिद्धांत, गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धांत तथा VAKT अधिगम शैली मॉडल जैसे स्थापित शैक्षिक सिद्धांतों पर आधारित है। मॉडल का उद्देश्य पारंपरिक भाषा-शिक्षण की सीमाओं को संबोधित करते हुए एक संरचित, अनुभवात्मक एवं समावेशी अधिगम ढाँचा विकसित करना है, जिसे कक्षा-स्तर पर व्यवस्थित रूप से लागू किया जा सके। मॉडल के विकास में अधिगम आवश्यकताओं की पहचान, बहु-संवेदी घटकों का चयन, संरचनात्मक ढाँचे का निर्माण तथा कक्षा-स्तरीय अनुप्रयोग की व्यवहारिकता पर विशेष बल दिया गया है। यह मॉडल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) एवं आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप है तथा हिंदी भाषा-शिक्षण में समावेशी और प्रभावी हस्तक्षेप की दिशा में एक सुदृढ़ शैक्षिक प्रयास प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल; आधारभूत भाषाई कौशल; हिंदी भाषा-शिक्षण; बहु-संवेदी अधिगम; VAKT अधिगम शैली; प्रारंभिक शिक्षा; समावेशी शिक्षा; FLN

1. प्रस्तावना

आधारभूत भाषाई कौशल भाषा-अधिगम की वह मूल संरचना हैं, जिन पर विद्यार्थियों की समस्त शैक्षिक प्रगति और संज्ञानात्मक विकास निर्भर करता है (Bernhofer & Tonin, 2022)। पठन, लेखन, श्रवण तथा मौखिक अभिव्यक्ति जैसे कौशल न केवल विषयवस्तु को समझने में सहायक होते हैं, बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति, तर्क-विकास और सामाजिक सहभागिता के लिए भी अनिवार्य माने जाते हैं (Sadiku, 2015)। यदि प्राथमिक स्तर पर इन कौशलों का समुचित विकास नहीं हो पाता, तो विद्यार्थियों में सीखने की निरंतर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिनका प्रभाव आगे की कक्षाओं में शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास और अधिगम अभिप्रेरणा पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है (Akyol, Temur, & Erol, 2021)।

समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि पारंपरिक भाषा-शिक्षण पद्धतियाँ सभी विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं को समान रूप से संबोधित करने में सक्षम नहीं हैं (Shao, 2025)। इसी पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP, 2020) तथा आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (Foundational Literacy and Numeracy - FLN) मिशन ने प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा कौशल के सुदृढ़ और सर्वसमावेशी विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है (NCERT, 2023)। इन नीतिगत पहलों का स्पष्ट उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक विद्यार्थी, उसकी अधिगम क्षमता अथवा पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, प्रारंभिक स्तर पर आवश्यक भाषाई दक्षताएँ अर्जित कर सके।

इसी शैक्षिक एवं नीतिगत संदर्भ में प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल का विकास किया गया है। यह मॉडल हिंदी भाषा-शिक्षण के लिए एक सुनियोजित, संरचित और सैद्धांतिक रूप से समर्थ ढाँचा प्रस्तुत करता है, जिसमें विविध संवेदी माध्यमों और अधिगम शैलियों को एकीकृत करते हुए भाषा-अधिगम को अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण और अर्थपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत मॉडल का उद्देश्य न केवल आधारभूत भाषाई कौशल के विकास को सुदृढ़ करना है, बल्कि प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण को अधिक समावेशी और व्यवहारोन्मुख बनाना भी है।

2. मॉडल विकास की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल का विकास सुदृढ़ शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है, जो अधिगम को एक बहुआयामी, गतिशील और सहभागी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं। इन सिद्धांतों का मूल प्रतिपाद्य यह है कि भाषा-अधिगम केवल संज्ञानात्मक क्रिया तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें संवेदी अनुभव, सामाजिक अंतःक्रिया, भावात्मक संलग्नता तथा सक्रिय सहभागिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मॉडल की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

बहु-संवेदी अधिगम सिद्धांत (Multisensory Learning Theory)

यह सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि जब अधिगम प्रक्रिया में एक से अधिक संवेदी माध्यम- दृश्य, श्रव्य, स्पर्शनीय एवं गतिक, का समन्वित प्रयोग किया जाता है, तो अधिगम अधिक प्रभावी, अर्थपूर्ण और दीर्घकालिक बनता है। भाषा-शिक्षण के संदर्भ में बहु-संवेदी अनुभव शब्द-पहचान, ध्वनि-बोध, स्मरण क्षमता तथा अवधारणात्मक स्पष्टता को सुदृढ़

करते हैं। इस सिद्धांत के आधार पर विकसित मॉडल में भाषा को केवल सुनने या पढ़ने तक सीमित न रखकर देखने, करने और अनुभव करने की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। (Moustafa, 1999)

वायगोत्स्की का समाज-सांस्कृतिक सिद्धांत (Vygotsky's Sociocultural Theory)

वायगोत्स्की के अनुसार अधिगम सामाजिक अंतःक्रिया और सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से घटित होता है। भाषा-विकास में सहपाठी संवाद, शिक्षक मार्गदर्शन और सहयोगात्मक गतिविधियाँ विशेष महत्त्व रखती हैं। प्रस्तुत मॉडल में इस सिद्धांत के अनुरूप सहयोगात्मक अधिगम, समूह कार्य और स्कैफोल्डिंग की अवधारणा को सम्मिलित किया गया है, जिससे विद्यार्थी अपनी वर्तमान क्षमताओं से आगे बढ़कर उच्च स्तर की भाषाई दक्षता प्राप्त कर सकें। (Vygotski, 2009)

गार्डनर का बहु-बुद्धि सिद्धांत (Gardner's Multiple Intelligence Theory)

गार्डनर का सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की बौद्धिक संरचना भिन्न होती है और वह विभिन्न प्रकार की बुद्धियों के माध्यम से सीखता है। भाषा-शिक्षण में यदि केवल भाषिक या तार्किक बुद्धि पर बल दिया जाए, तो अनेक विद्यार्थियों की क्षमताएँ उपेक्षित रह जाती हैं। इस मॉडल में भाषिक, शारीरिक-गतिशील, दृश्य-स्थानिक, संगीतमय एवं अंतर्वैयक्तिक बुद्धियों को ध्यान में रखते हुए विविध गतिविधियों का समावेशन किया गया है, जिससे सभी विद्यार्थियों को अधिगम के समान अवसर प्राप्त हो सकें। (Gardner & Moran, 2006)

VAKT अधिगम शैली मॉडल (Visual-Auditory-Kinesthetic-Tactile Model)

VAKT मॉडल यह मानता है कि विद्यार्थी विभिन्न अधिगम शैलियों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हैं। कुछ विद्यार्थी दृश्य सामग्री से बेहतर सीखते हैं, कुछ श्रव्य माध्यम से, जबकि अन्य गतिक अथवा स्पर्शनीय अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से अधिगम करते हैं। प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल में इन सभी अधिगम शैलियों के अनुरूप शिक्षण रणनीतियों का चयन किया गया है, जिससे भाषा-अधिगम प्रक्रिया लचीली, समावेशी और शिक्षार्थी-केंद्रित बन सके। (Azahari, 2025)

इन सभी सिद्धांतों के समन्वय से मॉडल को एक ऐसा सैद्धांतिक आधार प्राप्त होता है, जो भाषा-अधिगम को केवल संज्ञानात्मक प्रक्रिया तक सीमित न रखकर भावात्मक, सामाजिक एवं क्रियात्मक आयामों के साथ संबद्ध करता है। परिणामस्वरूप, यह मॉडल हिंदी भाषा-शिक्षण में आधारभूत भाषाई कौशल के समग्र और संतुलित विकास के लिए एक प्रभावी ढाँचा प्रस्तुत करता है।

3. मॉडल विकास की प्रक्रिया

बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल का विकास एक सुनियोजित, क्रमबद्ध एवं चरणबद्ध प्रक्रिया के अंतर्गत किया गया है, ताकि यह मॉडल सैद्धांतिक रूप से सुदृढ़ होने के साथ-साथ व्यवहारिक स्तर पर भी प्रभावी और उपयोगी सिद्ध हो सके। मॉडल विकास की प्रक्रिया में शैक्षिक आवश्यकताओं, अधिगम विविधताओं तथा कक्षा-स्तरीय वास्तविकताओं को समान रूप से ध्यान में रखा गया है। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है-

3.1 आवश्यकताओं की पहचान

प्रथम चरण में प्राथमिक स्तर के उन विद्यार्थियों की भाषाई अधिगम आवश्यकताओं की पहचान की गई, जिनमें हिंदी भाषा के आधारभूत कौशल अपेक्षित स्तर से कम पाए जाते हैं। यह पहचान कक्षा-अवलोकन, शिक्षकों के अनुभव, पूर्व शैक्षिक उपलब्धियों तथा भाषा-अधिगम में आने वाली सामान्य कठिनाइयों के विश्लेषण के माध्यम से की गई। इस चरण का उद्देश्य यह समझना था कि विद्यार्थी किन कौशलों-पठन, लेखन, श्रवण या मौखिक अभिव्यक्ति-में अधिक संघर्ष कर रहे हैं और उनके पीछे संभावित कारण क्या हैं।

3.2 संवेदी एवं शैक्षिक घटकों का निर्धारण

अधिगम आवश्यकताओं की पहचान के उपरांत मॉडल के लिए उपयुक्त संवेदी एवं शैक्षिक घटकों का चयन किया गया। इसमें दृश्य, श्रव्य, गतिक तथा स्पर्शनीय (VAKT) घटकों को केंद्रीय स्थान दिया गया, ताकि भाषा-अधिगम को बहुआयामी बनाया जा सके। प्रत्येक घटक को भाषा के विशिष्ट पक्षों-ध्वनि-बोध, शब्दावली विकास, वाक्य संरचना एवं अभिव्यक्ति-से जोड़ा गया, जिससे अधिगम अनुभव अधिक स्पष्ट और अर्थपूर्ण बन सके।

3.3 संरचनात्मक ढाँचे का निर्माण

इस चरण में मॉडल के समग्र ढाँचे को विकसित किया गया। मॉडल को इस प्रकार संरचित किया गया कि अधिगम एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में आगे बढ़े, पहले मानसिक एवं शारीरिक तत्परता का विकास, फिर भाषा अवधारणाओं का निर्माण और अंततः अर्जित ज्ञान का व्यवहारिक प्रयोग। इस संरचना ने मॉडल को लचीला और विभिन्न कक्षा-संदर्भों में लागू करने योग्य बनाया।

3.4 गतिविधियों का नियोजन एवं एकीकरण

संरचनात्मक ढाँचे के अनुरूप बहु-प्रतिमान गतिविधियों का नियोजन किया गया। इन गतिविधियों को इस प्रकार विकसित किया गया कि वे विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता को प्रोत्साहित करें और भाषा-अधिगम को अनुभवात्मक बनाएँ। दृश्य सामग्री, श्रव्य अभ्यास, शारीरिक गतिविधियाँ एवं स्पर्शनीय शिक्षण सामग्री को परस्पर समन्वित रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे सभी प्रकार की अधिगम शैलियों को संबोधित किया जा सके।

3.5 कक्षा-स्तरीय अनुप्रयोग की उपयुक्तता

अंतिम चरण में यह सुनिश्चित किया गया कि विकसित मॉडल कक्षा-स्तर पर व्यवहारिक रूप से लागू किया जा सके। समय-सारिणी, उपलब्ध संसाधनों और शिक्षकों की भूमिका को ध्यान में रखते हुए मॉडल को सरल, लचीला एवं अनुकूलनीय बनाया गया। इसका उद्देश्य यह था कि शिक्षक बिना अतिरिक्त बोझ के इस मॉडल को नियमित शिक्षण प्रक्रिया में सम्मिलित कर सकें।

इस प्रकार, बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल का विकास एक व्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से किया गया है, जिसमें सैद्धांतिक आधार, अधिगम आवश्यकताएँ और व्यवहारिक कक्षा-संदर्भों का संतुलित समन्वय सुनिश्चित किया गया है। यह प्रक्रिया मॉडल को हिंदी भाषा-शिक्षण में आधारभूत भाषाई कौशल के विकास हेतु एक सुदृढ़ और प्रभावी हस्तक्षेप के रूप में स्थापित करती है।

4. मॉडल की विशेषताएँ

प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल को इस प्रकार विकसित किया गया है कि यह प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा-शिक्षण की विविध चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रस्तुत कर सके। इसकी संरचना और कार्यप्रणाली में ऐसी विशेषताएँ निहित हैं, जो इसे पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से भिन्न और अधिक प्रभावी बनाती हैं। मॉडल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

समावेशी स्वरूप

यह मॉडल विभिन्न अधिगम शैलियों, क्षमताओं एवं पृष्ठभूमियों वाले विद्यार्थियों को समान रूप से संबोधित करता है। दृश्य, श्रव्य, गतिक एवं स्पर्शनीय माध्यमों के समन्वित उपयोग के माध्यम से यह उन विद्यार्थियों के लिए भी अनुकूल सिद्ध होता है, जो पारंपरिक पाठ्यपुस्तक-आधारित शिक्षण से अपेक्षित लाभ नहीं उठा पाते। विशेष आवश्यकता वाले तथा भाषा-अधिगम में संघर्षरत विद्यार्थियों के लिए भी यह मॉडल अधिगम के वैकल्पिक और सुलभ अवसर प्रदान करता है।

लचीलापन एवं अनुकूलनशीलता

मॉडल की एक प्रमुख विशेषता इसका लचीला स्वरूप है, जिसके अंतर्गत इसे कक्षा-संदर्भ, विद्यार्थियों की संख्या, उपलब्ध शिक्षण सामग्री तथा समय-सारिणी के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। शिक्षक अपनी कक्षा की आवश्यकताओं और संसाधनों के अनुरूप गतिविधियों का चयन एवं संशोधन कर सकते हैं, जिससे मॉडल का प्रयोग विविध शैक्षिक परिस्थितियों में संभव हो पाता है।

अनुभवात्मक एवं सक्रिय अधिगम पर आधारित

यह मॉडल भाषा-अधिगम को निष्क्रिय प्रक्रिया के रूप में न प्रस्तुत कर, बल्कि क्रियात्मक, अनुभवात्मक और सहभागी प्रक्रिया के रूप में विकसित करता है। विद्यार्थियों को देखने, सुनने, करने और अनुभव करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं, जिससे भाषा की अवधारणाएँ अधिक स्पष्ट, अर्थपूर्ण और स्थायी बनती हैं। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी केवल ज्ञान-ग्रहणकर्ता न होकर सक्रिय अधिगमकर्ता के रूप में संलग्न होते हैं।

नीतिगत संरेखण एवं समसामयिक प्रासंगिकता

बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) तथा आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप विकसित किया गया है। यह मॉडल प्रारंभिक स्तर पर भाषा कौशल के सुदृढ़ विकास, समावेशी शिक्षा और अधिगम-अंतराल को कम करने जैसे नीतिगत लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक है। इस प्रकार, यह न केवल शैक्षिक व्यवहार के स्तर पर, बल्कि नीतिगत दृष्टि से भी प्रासंगिक और उपयोगी सिद्ध होता है।

इन विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल हिंदी भाषा-शिक्षण में आधारभूत भाषाई कौशल के विकास हेतु एक समग्र, लचीला और प्रभावी शैक्षिक ढाँचा प्रदान करता है।

5. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल के विकास से हिंदी भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं। यह मॉडल न केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक नवाचारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, बल्कि प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु एक व्यवहारिक एवं अनुसंधान-आधारित ढाँचा भी प्रदान करता है।

प्रथम, यह मॉडल शिक्षकों को पारंपरिक, एकरैखिक और पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित पद्धतियों से आगे बढ़कर बहु-प्रतिमान शिक्षण रणनीतियों के सुनियोजित और उद्देश्यपूर्ण प्रयोग के लिए प्रेरित करता है। दृश्य, श्रव्य, गतिक एवं स्पर्शनीय माध्यमों के समन्वित उपयोग से शिक्षक भाषा-शिक्षण को अधिक रोचक, सहभागी और शिक्षार्थी-केंद्रित बना सकते हैं, जिससे कक्षा में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और अधिगम अभिरुचि में वृद्धि होती है।

द्वितीय, यह मॉडल विभिन्न अधिगम शैलियों और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण में समावेशिता को सुदृढ़ करता है। विशेष आवश्यकताओं वाले, भाषा-अधिगम में संघर्षरत तथा धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह मॉडल वैकल्पिक अधिगम मार्ग प्रदान करता है, जिससे वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप भाषा कौशल विकसित कर सकें। इस प्रकार, यह मॉडल अधिगम-अंतराल को कम करने और सभी विद्यार्थियों के लिए समान अधिगम अवसर सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होता है।

तृतीय, बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास के लिए भी उपयोगी निहितार्थ प्रस्तुत करता है। यह मॉडल शिक्षकों को अपनी शिक्षण योजनाओं में नवाचार, लचीलापन और चिंतनशील अभ्यास को सम्मिलित करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे वे कक्षा-स्तरीय समस्याओं के समाधान हेतु अधिक प्रभावी रणनीतियाँ विकसित कर सकें।

अंततः, यह मॉडल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) एवं आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है। प्रारंभिक स्तर पर भाषा कौशल के सुदृढ़ विकास के माध्यम से यह मॉडल दीर्घकालिक शैक्षिक उपलब्धियों की नींव को मजबूत करता है। इस प्रकार, प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल हिंदी भाषा-शिक्षण में एक प्रभावी, समावेशी और व्यवहारोन्मुख शैक्षिक हस्तक्षेप के रूप में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

6. निष्कर्ष

इस प्रकार, प्रस्तुत बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल का विकास एक सैद्धांतिक रूप से सुदृढ़, व्यावहारिक रूप से अनुप्रयोग योग्य तथा अनुसंधान-आधारित शैक्षिक प्रयास के रूप में स्थापित होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा में आधारभूत भाषाई कौशल- पठन, लेखन, श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति, के समग्र विकास को सुदृढ़ करना है। मॉडल का निर्माण बहु-संवेदी अधिगम, समाज-सांस्कृतिक अंतःक्रिया, बहु-बुद्धि एवं अधिगम शैली सिद्धांतों के समन्वय पर आधारित है, जिससे यह भाषा-अधिगम की जटिल और बहुआयामी प्रकृति को प्रभावी ढंग से संबोधित करता है।

यह मॉडल पारंपरिक भाषा-शिक्षण की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अधिगम को अधिक सहभागी, अनुभवात्मक और समावेशी बनाने की दिशा में एक ठोस शैक्षिक ढाँचा प्रस्तुत करता है। प्राथमिक स्तर पर इसके प्रयोग से न केवल विद्यार्थियों की भाषाई दक्षताओं में सुधार की संभावना प्रबल होती है, बल्कि अधिगम-अंतराल को कम करने और संघर्षरत विद्यार्थियों को मुख्यधारा से जोड़ने में भी सहायता मिलती है।

इसके अतिरिक्त, यह बहु-प्रतिमान हस्तक्षेप मॉडल वर्तमान अध्ययन की वैचारिक और कार्यप्रणालीगत आधारशिला के रूप में कार्य करता है, जिसके माध्यम से इसके प्रभावों का वैज्ञानिक परीक्षण संभव हो पाता है। साथ ही, यह मॉडल भविष्य के भाषा-शैक्षिक अनुसंधानों, शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा विविध भाषाई संदर्भों में व्यवहारिक अनुप्रयोगों के लिए भी एक सुदृढ़ और उपयोगी संदर्भ प्रदान करता है। इस प्रकार, प्रस्तुत मॉडल हिंदी भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में नवाचार और गुणवत्ता-वर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में देखा जा सकता है।

सन्दर्भ

1. Akyol, H., Temur, M., & Erol, M. (2021). Experiences of Primary School with Students with Reading and Writing Difficulties. *International Journal of Progressive Education, 17*(5), 279-298. doi:https://doi.org/10.29329/ijpe.2021.375.18
2. Azahari, I. (2025). *Myths & Theories in LEarning Styles (VAK Model) in Neuro-Linguistiv Programme*. Research Gate. doi:https://doi.org/10.13140/RG.2.2.34603.35363
3. Bernhofer, J., & Tonin, M. (2022). The effect of the language of instruction on academic performance. *Labour Economics, 78*(October 2022), 102218. doi:https://doi.org/10.1016/j.labeco.2022.102218
4. Gardner, H., & Moran, S. (2006). The science of multiple intelligences theory: A response to Lynn Waterhouse. *Educational Psychologist, 41*(4), 272-232. doi:https://doi.org/10.1207%2Fs15326985ep4104_2
5. Moustafa, B. M. (1999). Multisensory Approaches and Learning Styles Theory in the Elementary School: Summary of Reference Papers. *Eric*, 13. Retrieved from https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED432388.pdf
6. NCERT. (2023, July 29). *Understanding Foundational Literacy and Numeracy*. Retrieved from Ministry of Education, Government of India: https://www.education.gov.in/en/nep/understanding-FLN
7. NEP. (2020). *National Educational Policy- 2020*. Retrieved from Ministry of Human Resource Development, Government of India: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
8. Sadiku, L. M. (2015). The Importance of Four Skills Reading, Speaking, Writing, Listening in a Lesson Hou. *European Journal of Language and Literature, 1*(1), 29-31. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/318536714_The_Importance_of_Four_Skills_Reading_Speaking_Writing_Listening_in_a_Lesson_Hour
9. Shao, Y. (2025). The collision between traditional methods and new learning: the difference between AI-assisted teaching and classroom teaching and its effect on students' English writing. *Advances in Social Behavior Research, 16*(3), 133-144. doi:https://doi.org/10.54254/2753-7102/2025.23333
10. Vygotski, L. (2009). Zone of proximal development. In *Penguin dictionary of psychology*. Penguin.